International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 12, December 2017
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

बौद्ध धर्म एवम् कला के प्रसिद्ध प्राथमिक केन्द्र के रूप में सारनाथ का महत्व

अतुल नारायण सिंह

शोध छात्र

प्राचीन इतिहास विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

वाराणसी से लगभग सात कि0मी0 की दूरी पर स्थित सारनाथ का प्राचीन नाम 'ऋषिपत्तन मृगदाव' प्राप्त होता है। इस नामकरण का विस्तृत विवरण महावस्तु अवदान में मिलता है।[1] बोधगया में सम्बोधि प्राप्त करने के बाद महामानव गौतम बुद्ध ने सारनाथ (ऋषिपत्तन मृगदाव) पहुँचकर अपना प्रथम धर्म उपदेश दिया था। (धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र)। भगवान बुद्ध का सारनाथ में प्रथम धर्म उपदेश ग्रहण करने वाले पाँच उनके पुराने साथी (पंचवर्षीय भिक्षु) थे, जिनके नाम (1) कौंडिल्य (2) बप्प (3) भद्दिय (4) महानाम और (5) अश्वजित थे। श्रेष्ठिपुत्र यश, सारनाथ में बुद्ध के छठवें शिष्य बने। ये सभी ऐसे शिष्य थे जिन्होंने इस लोक में पहली बार त्रिशरण ग्रहण किया था इसीलिए इन्हें 'तेवाचिक' उपासक भिक्षु कहा गया था। तत्पश्चात् चार नागरिकों और पचास जनपदों ने भी यहीं दीक्षा ग्रहण की थी। इस प्रकार सारनाथ में साठ लोगों ने भगवान बुद्ध की शिक्षाओं को ग्रहण किया। तथागत गौतम बुद्ध को सम्मिलित कर उस समय इस लोक में कुल इकसठ 'अर्हन्त भिक्षु' थे।[2]

ऋषिपत्तन मृगदाव में (सारनाथ में) भगवान बुद्ध द्वारा दिये गये सम्पूर्ण उपदेश को बुद्ध जगत में 'धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र' के नाम से जाना जाता है। उपदेश देने के पश्चात् तथागत ने उस भिक्षु संघ को जो

1 महावस्तु, जिल्द–1, पृ0 357–66

2 महावग्ग, पृ0 23

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

आदेश और निर्देश दिया था वह इस प्रकार है– ''हे भिक्षुओं बहुजन हित और बहुजन सुख के लिए, लोगों पर अनुकम्पा करने के लिए, उनके आर्थिक हित और समृद्धि के लिए विचरण करो। एक साथ दो भिक्षु न जाना। लोगों के पास जाकर उनके जीवन के प्रारम्भ के लिए कल्याणकारी, मध्य में कल्याणकारी और जीवन के अन्त के लिए भी कल्याणकारी उपदेश के अलावा और कुछ न हो। सार्थक रूप से परिशुद्ध जीवन और ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विचरण करो और लोगों को उपदेश करो।''[3] यहाँ से प्राप्त एक सप्त ध्यानी बुद्धों का प्रस्तर खण्ड (पैनल) उल्लेखनीय है।

ऐसे बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध प्राथमिक केन्द्र सारनाथ में छठवीं और पाँचवीं शताब्दी ई0पू0 से लेकर कुछ एक अन्तरालों के अलावा बौद्ध धर्म बराबर ही जीवन्त रहा और देश विदेश के बौद्ध धर्मानुयायिओं ने यहाँ अनेकानेक बौद्ध स्मारकों का निर्माण करवाया जो वहाँ के पुरातात्विक सर्वेक्षण और उत्खनन से निरन्तर प्रकाश में आ रहे हैं।

भारत में बौद्ध धर्म के पराभव के पश्चात् दीर्घकाल तक सारनाथ बौद्ध जगत से ओझल और उपेक्षित रहा, जिसके चलते यह महान बौद्ध केन्द्र खण्डहरों और टीलों में समाहित हो गया। 18वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में यह उस समय प्राकश में आया जब 1794 ई0 में काशी के स्थानीय राजा चेतसिंह के दीवान जगत सिंह अपने नाम से बनारस में एक मुहल्ला बसाने के लिए सारनाथ के सबसे बड़े ध्वस्त धर्मराजिक स्तूप की ईंटों प्रस्तरों आदि को निकलवाकर ले जाने लगे। तब उस समय उसे प्रस्तर की एक मंजूषा प्राप्त हुई, जिसके अन्दर हरे रंग के प्रस्तर की एक दूसरी छोटी मंजूषा में अस्थियों के कुछ टुकड़े मोती, स्वर्णपत्र और रत्न सुरक्षित रूप से रखे हुए प्राप्त हुए। अस्थि अवशेषों को अशुभ मानकर दीवान जगतसिंह ने उन्हें गंगा नदी में फेंकवा दिया।[4] ये अस्थि धातु वस्तुतः भगवान बुद्ध के पवित्र अस्थि–अवशेष थे, जिन्हें सम्राट् अशोक ने अपने द्वारा निर्मित ऋषिपत्तन के इसी धर्मराजिक स्तूप में प्रतिनिधानित करवाया था। इसी धर्मराजिक स्तूप से भगवान बुद्ध की एक मूर्ति भी प्राप्त हुई थी जिसकी चरण चौकी पर पाल शासक महीपाल का नाम उत्कीर्णित पाया गया था। यह मूर्ति सारनाथ के पुरातत्व संग्रहालय में प्रदर्शित है।

सारनाथ के धर्मराजिक स्तूप को जगत सिंह द्वारा खुदवाने, ईटें पत्थर निकालने तथा प्राप्त प्रस्तर मंजूषा एवं उसके पुरावशेषों के विषय में सर्वप्रथम 1798 ई0 में एशियाटिक रिसर्च जर्नल में एक लेख प्रकाशित हुआ। जिससे यह भी ज्ञात हुआ कि पाल शासक धर्मपाल ने इस स्तूप का जीर्णोद्धार करवाया था। लेकिन उस समय तक सारनाथ का कोई विधिवत् पुरातात्विक सर्वेक्षण नहीं किया गया था। इस सम्बन्ध में सबसे पहले 1815 ई0 में कर्नल सी0 मैकेंजी ने उसके बाद जनरल एजेग्जेण्डर कनिंघम ने

---

3 महावग्ग, पृ0 23

4 ए0 घोष, एन इनसाइक्लोपीडिया आफ इण्डियन आर्कियालजी, पृ0 398

दिसम्बर 1834 से जनवरी 1836 ई0 तक वैज्ञानिक पुरातात्विक सर्वेक्षण और उत्खनन करवाया। इस क्रम में उन्होंने धर्मराजिक स्तूप का भी उत्खनन करवाया। इस उत्खनन क्रम में उन्हें एक रेखांकित प्रस्तर प्राप्त हुआ जो स्तूप के शीर्षभाग से तीन फुट नीचे से प्राप्त हुआ था, जिस पर छठीं शताब्दी ई0 का एक बौद्ध सूत्र अंकित था। कनिंघम महोदय ने इस धर्म राजिक स्तूप को मूलरूप में छठी शताब्दी ई0 में निर्मित किये जाने की सम्भावना व्यक्त की।

पुरातात्विक उत्खननों से सारनाथ के निम्नलिखित महत्वपूर्ण बौद्ध स्मारक प्रकाश में आये–

मूलगंधकुटी विहार

सारनाथ में भगवान बुद्ध जिस स्थान पर ठहरते थे उसी स्थान पर मूलगंध कुटी विहार का निर्माण किया गया था। जिसके पुरावशेष धर्मराजिक स्तूप के पास में विद्यमान हैं। इसे मुख्य मन्दिर भी कहा जाता है। श्री दयाराम साहनी का मतह है कि यह मूलगंध कुटी विहार बोध गया के महाबोधि विहार के समान रहा होगा। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी इसे सातवीं शताब्दी में देखा था। इसके मध्य में धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में भगवान बुद्ध की आदमकद वाली ताँबें की मूर्ति स्थापित थी। संस्थागार में भगवान बुद्ध की भूमि स्पर्श मुद्रा में एक मूर्ति प्राप्त हुई थी। इस मुख्य विहार का वर्तमान स्वरूप गुप्तकालीन माना जाता है। उल्लेखनीय है कि सम्राट अशोक ने उपगुप्त के साथ इस बौद्ध तीर्थ की यात्रा की थी[5] और यहां एक स्तूप का निर्माण कराया था।

धर्मराजिक स्तूप

मूलगंधकुटी विहार के पास में दक्षिण की ओर धर्मराजिक स्तूप के ध्वंशावशेष विद्यमान हैं। यह स्तूप ही सारनाथ का एक मात्र धातु स्तूप था क्योंकि इसी स्तूप से भगवान बुद्ध की अस्थि धातु मंजूशा प्राप्त हुई थी, जिसकी पवित्र अस्थि धातुओं को अशुभ मानकर जगत सिंह ने गंगा में फेंकवा दिया था। प्रस्तर मंजूशा कलकत्ता के संग्रहालय में सुरक्षित है। जनरल कनिंघम को उत्खनन में एक नीले रंग के पत्थर की बनी एक छोटी सी मंजूषा भी प्राप्त हुई थी। सम्भवतः इसी मंजूषा में भगवान बुद्ध के अस्थि धातु सुरक्षित रखे गये होंगे। धर्मराजिक स्तूप में तथागत के अस्थि धातुओं की प्रतिष्ठापना की पुष्टि ह्वेनसांग ने की है। तथागत बुद्ध को 'धर्मराज' भी कहा गया है। इसीलिए उनके अस्थि अवशेषों को प्रतिनिधानित कर बनवाये गये स्तूप को धर्मराजिक स्तूप कहा गया। इस स्तूप के चारों ओर छोटे बड़े पूजापरक मनौती स्तूपों का निर्माण बौद्ध धर्म के श्रद्धालुओं ने करवाया था जिनको इस समय भी देखा जा सकता है। सारनाथ के इस विशालतम अस्थि धातु रूप का पाँच बार संवर्द्धन या विशालीकरण हुआ था।

---

[5] अग्रवाल, वी0एस0, सारनाथ, पृ0 9–12
दिव्यावदान, पृ0 251

थम्मेक स्तूप

धर्म राजिक स्तूप के सामने लगभग 200 फीट की दूरी पर इस समय सारनाथ का सबसे ऊँचा धम्मेक स्तूप विद्यमान है। ह्वेनसांग ने लिखा है कि धर्मराजिक स्तूप के अतिरिक्त धम्मेक स्तूप का निर्माण भी सम्राट अशोक ने करवाया था। कनिंघम महोदय ने वर्तमान धम्मेक स्तूप के अन्दर सबसे नीचे मौर्यकाल की ईंटें प्राप्त की थीं। जिनसे प्रारम्भिक स्तूप बना था। उन्हें स्तूप से छठवीं शताब्दी ई0 के अक्षरों में अंकित एक प्रस्तर खण्ड भी मिला था जिस पर बौद्ध धर्म का मूल सूत्र 'ये धर्मा हेतु प्रभवा' अंकित था।

स्तूप से 12वीं शताब्दी की लिपि में भी एक लेख मिला है जिसमें 'धमाक जयतु' लिखा है जिसका अर्थ है 'धमाक की विजय हो' पाल शासक महीपाल के सारनाथ अभिलेख में इस स्तूप का नाम 'धर्मचक्र' धर्मचक्र भिक्षु संघस्य, स्तूप लिखा है। इन्हीं आधारों पर डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने यह मत प्रतिपादित किया था कि इस (धमेक, धमाक, धर्मचक्र) स्तूप को अशोक ने उसी स्थान पर बनवाया था जहाँ गौतम बुद्ध ने धर्म चक्र प्रवर्तन किया था।[6]

इस स्तूप के नाम के विषय में जिन प्रभुसूरी ने 'तीर्थ कल्प' में इसका नाम 'धर्मेक्षा' लिखा है। डॉ0 सी0एस0 उपासक, इसका मूल नाम धम्मिक (धम्मिकोधम्म राजा अशोक द्वारा स्थापित करवाने के कारण) कनिंघम 'धम्मेख' और मार्शल 'धम्मेक' बताते हैं। इस समय प्राचीन स्मारकों में सारनाथ का धम्मेक, स्तूप सबसे ऊँचा और भव्य है। आधार सहित इसकी ऊँचाई 143 फिट और धरातल पर इसका व्यास 93 फिट है। धरातल से 36 फिट 9 इंच ऊँचाई तक पाषाण शिलाओं से बना है। शिलाओं को लोहे के क्लेम्पों से कसकर सुदृढ़ बनाया गया है, जिसे आधार बताया गया है। इस आधार की अर्द्ध ऊँचाई पर चारों ओर समान दूरी पर आठ विशाल और मेहराबदार ताखें (आले) हैं जिनमें बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियाँ स्थापित थीं। धर्मराजिक के सामने वाला ताख रचना और अलंकरण में विशिष्ट है इसीलिए यह माना जाता है कि इसमें भावीं बुद्ध मैत्रेय की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गयी होगी। डॉ0 वी0एस0 अग्रवाल का मत है गुप्त कालीन इन प्रस्तर शिल्पियों ने बनारस के रेशमी वस्त्रों पर (विशेषकर साड़ियों पर) बनायी जाने वाली कला को ही शिल्पांकित कर दिया है।

चौखण्डी स्तूप

वाराणसी नगर से सारनाथ को जाने पर सारनाथ के मुख्य भग्नावेशेषों से लगभग आधा किमी0 पहले बायीं और विशाल चौखण्डी स्तूप ध्वस्तावस्था में विद्यमान है। इसकी स्थापना भी सम्राट अशोक द्वारा उस स्थान पर करवाई गयी थी जहाँ प्रथम बार गौतम बुद्ध और पंचवर्गीय परिव्राजकों (भिक्षुओं) की भेंट हुई थी। इस प्रकार यह भी घटनापरक उद्देशिक स्तूप था। चार बार विशालीकरण होने के कारण यह

[6] अग्रवाल, वी0एस0, सारनाथ, पृ0 12

चौखण्डी स्तूप कहलाया। ऊपर खण्ड नष्ट हो गया है लेकिन तीन खण्ड संवर्द्धन अब भी दिखाई पड़ते हैं। इस समय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग चारों ओर नीचे से सफाई करवा रहा है जिससे स्तूप का निचला चौकोर शिल्पांकित गुप्त कालीन ईंटों का निर्मित ऊँचा चबूतरा दिखाई पड़ता है जिसे देखने से सम्पूर्ण विशाल स्तूल का अनुमान आश्चर्यचकित कर देता है। चौखण्डी स्तूप के ऊपर एक अठपहलू कमरा है जिसे सम्राट अकबर ने अपने पिता हुमायूँ के आदेश पर बनवाया था क्योंकि शेरशाह सूरी से युद्ध से भाग कर हुमायूँ ने इसी स्तूप के पीछे रातभर छिप कर अपनी जान बचाई थी। इस आशय का अरबी में पत्थर पर लिखाएक लेख उस कमरे के दरवाजे के ऊपर अब भी लगा हुआ है।

चौखण्डी स्तूप के उत्खनन के चुनार के पत्थर की 3 फिट 2 इंच ऊँची और 1 फिट 7.5 इंच चौड़ी धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति मिली थी। जिसकी चौकी में धर्म चक्र तथा दोनों ओर दो मृग बने हैं। दूसरी बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की मूर्ति मिली जो अपने सिर पर अमिताभ की मूर्ति धारण किये हैं

यश प्रब्रज्या स्तूप

मूल गन्ध कुटी विहार के पास उत्तर की ओर एक ईंटों से निर्मित विशाल स्तूप के गोलाकार धरातली अवशेष विद्यमान हैं। इसका सम्वर्द्धन और विशालीकरण भी चार बार हुआ है। नीचे की ईंटों के आधार पर इसे भी मौर्य कालीन माना गया है। ह्वेनसांग के अनुसार यह स्तूप उस स्थान पर स्थापित करवाया गया था, जहाँ बैठकर भगवान बुद्ध ने मैत्रेय बुद्ध के भविष्य में उत्खनन होने की धम्म घोषणा की थी। लेकिन ह्वेनसांग के इस कथन की पुष्टि पालि बौद्ध साहित्य से नहीं होती क्योंकि गौतम बुद्ध ने मैत्रेय बुद्ध की उद्घोषणा मगध के मातुल ग्राम में की थी।[7]

अशोक स्तम्भ

मूलगन्ध कुटी विहार के निकट पश्चिम की ओर सम्राट अशोक द्वारा स्थापित प्रस्तर स्तम्भ भग्न रूप में विद्यमान है। किसी समय यह 50 फिट ऊँचा था। इसका ऊपरी भाग 2.31 मीटर ऊँचा है जो चार सिंहों से युक्त है। यह स्थानीय पुरातत्व संग्रहालय में रखा है। सम्पूर्ण स्तमभ बुद्ध और उनके धम्म का प्रतीक है। यह कला का एक अद्वितीय उदाहरण माना जाता है। स्तम्भ के शीर्ष भाग का सबसे नीचे का भाग उल्टे कमल का, कमल कुम्भी आकार का है। जिसके ऊपर गोठ कण्ठ भाग है जिसके ऊपर ऊँची चौकी है जिसमें हाथी, बैल, सिंह और अश्व गतिमान अवस्था में बनपाये गये हैं। प्रत्येक दो पशुओं के बीच 24 तीलियों वाला धर्म चक्र बना हुआ है। चौकी के ऊपर चारों दिशाओं में मुँह करके धम्म गर्जना करते हुए चार सिंह आपस में पीठ जोड़े हुए बनाये गये हैं। चारों शेरों के ऊपर भी एक 32 तीलियों वाला बुद्ध चक्र था। यहाँ इस स्तम्भ में सम्पूर्ण बौद्ध धर्म को ही समाहित कर दिया गया है। कमल निर्लिप्तता का द्योतक

[7] श्रमण विधा, पृ0 104

है। जो बुद्धचर्या को दर्शाता है। चार पशुओं में हाथी उनकी माता द्वारा गर्भ धारण का प्रतीक, वृष=जन्म का प्रतीक सिंह=शक्ति का प्रतीक और अश्व=महाभिनिष्क्रमण का प्रतीक है। दो पशुओं के मध्य 24 तीलियों वाला धर्म चक्र एकमत के अनुसार 2 अन्त 4 आर्यसत्य, 8 आष्टांगिक और 10 पारमिताओं (कुल 24) को बतलाता है। दूसरे मत के अनुसार 24 तीलियाँ प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुलोम और प्रतिलोम दोनों गतियों को दर्शाती हैं। इसमें 12 कड़ियाँ (तीलियाँ) दुःख में फँसने और 12 कड़ियाँ दुःख से छुटकारा पाने के लिए हैं। इस बुद्ध धम्म की गर्जना चारों सिंह कर रहे हैं अर्थात् जन–जन तक उसे पहुँचा रहे हैं। चारों सिंहों के ऊपर भी एक बत्तीस तीलियों वाला चक्र था जो बुद्ध के 32 महापुरूष लक्षणों को दर्शाता है। इसीलिए उसे 'बुद्ध चक्र' कहा जाता है।

इस प्रकार यह अशोक स्तम्भ बुद्ध और बौद्ध धर्म का पूर्ण प्रतिबिम्ब ही है।

पहाड़िया स्तूप

सारनाथ के सुप्रसिद्ध चौखण्डी स्तूप से तीन किलोमीटर दूर दक्षिण पश्चिम दिशा में यह स्तूप विद्यमान है जो किसी विशाल स्तूप का ही अवशिष्ट भाग है। यह स्तूप, गाजीपुर की ओर से सारनाथ आने पर वाराणसी–गाजीपुर राजमार्ग के दाहिनी ओर पहाड़िया नामक गाँव में स्थित है। पहाड़िया नामक गाँव में स्थित होने के कारण यह पहाड़िया स्तूप कहलाया। यह स्तूप लगभग एक चौथाई किमी0 के क्षेत्र को परिवृत्त करता है। सर जान मार्शल ने इस मृत्तिका स्तूप का निरीक्षण किया था उस समय स्थानीय लोगों ने उन्हें इसका नाम 'झौवा झाड़न' बताया था और यह भी बताया था कि सारनाथ में निर्माण कार्य से बनारस लौटते समय श्रमिक अपना–अपना झौवा (टोकरी) यही झाड़ते थे और कुछ देर बैठकर आराम करते थे। उस झौवा झाड़ मिट्टी से यह ढेर बन गया।

प्राचीन बौद्ध स्तूपों के प्रति निरादर भाव दर्शाने के कारण अबौद्धों ने इस प्रकार की कथाएँ प्रचलित की है। उल्लेखनीय है कि श्रावस्ती के एक डेढ़ किमी0 दूर श्रावस्ती से बलरामपुर आने पर दायीं ओर एक विशाल प्राचीन स्तूप के ध्वंसावशेष विद्यमान हैं जो अशोक द्वारा निर्मित यमक प्रतिहार्य स्तूप ही है, उसे भी स्थानीय लोग झौवा झाड़न ही कहते हैं। अन्य बौद्ध स्तूपों के विषय में भी ऐसी ही किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।

डॉ0 सी0एस0 उपासक का कथन है कि इस मृत्तिका स्तूप का निर्माण कार्य पूरा नहीं हो पाया होगा जिसके कारण उसकी लम्बाई, चौडाई से अधिक है। पूर्णरूपेण निर्मित होने पर यह लम्बाई चौड़ाई समान हो जाती। इस मृतिका स्तूप का पुरातात्विक अन्वेषण और उत्खनन होना आवश्यक है तभी इसके विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

लहुरावीर स्तूप

यह एक मात्र ऐसा स्तूप है जो वर्तमान में वाराणसी नगर में स्थित है। यह स्तूप लहुरावीर के पास वाराणसी रेलवे स्टेशन जाने वाले मार्ग पर स्थित है। यह मृत्तिका स्तूप हैं जो पूरा मिट्टी से निर्मित है। इसे लोगों ने बाल्मीकि आश्रम नाम दे दिया है। यही नहीं उसके शीर्ष भाग पर एक मन्दिर का निर्माण भी करवा दिया है। डॉ0 उपासक का मत है कि इसका मूल नाम राहुलवीर स्तूप था जो समय की गति के साथ परिवर्तित होकर लाहुरवीर और बाद में लहुरावीर हो गया है। बौद्ध भिक्षु राहुलवीर यहीं किसी बुद्ध विहार में रहते थे जिनकी स्मृति के लिए यह स्मृतिका स्तूप बनाया गया था। इस प्रकार यह शारीरिक स्तूप रहा है जिसमें राहुल स्थविर के अवशेष प्रतिनिधानित किये गये थे। इस मृत्तिका स्तूप की इस समय भी ऊँचाई 30–40 फिट है।

बौद्ध धर्म में स्थविरों और महास्थविरों के शरीर अवशेषों पर मृत्तिका स्तूप स्थापित करने की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। यह उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान का ही प्रतीक रहा है।सारनाथ मेंबुद्धकालीन परिवेश में राजनीतिक विकेन्द्रीकरण, दैवी राजत्व सिद्धान्त, आपद धर्म संकल्पना, भूमि अनुदान की प्रक्रिया तथा राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य व्यापार के स्वरूप और परिवर्तन के तत्व प्रमुखतः दृष्टिगोचर होते हैं। बौद्ध साहित्य से प्राचीन भारतीय उद्योगों, व्यापार और वाणिज्य तथा उनके सामूहिक संगठन की एक स्पष्ट तथा विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। इस समय भारत की ग्रामीण सभ्यता के समानान्तर ही एक नगरीय सभ्यता का भी विकास हो रहा था जिसमें वाराणसी प्रमुख था। उन नगरों में रहने वाले बड़े–बड़े श्रेष्ठिन और जेट्ठक इन नगरों को व्यापारिक सूत्र में एक दूसरे से जोड़ने वाले सार्थ, उद्योग, व्यापार और आर्थिक स्थितियों का नियमन करने वाली अनेकों श्रेणियां थी। उस समय के सेठों के पास के अपार धन तथा बौद्ध संघ तथा साधारण समाज को उस धन से दिये जाने वाले दान तथा ऐसे जनकार्यों के माध्यम से एक सामाजिक नियंत्रण भी पनपा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- कस्सप, जगदीस 'चुल्लवग्ग' नवनालन्दा महाविहार, 1956
- कौसल्यायन, आनन्द 'अंगुत्तर निकाय' (हिन्दी), महाबोधि सभा, कलकत्ता, 1958–59
- शास्त्री, द्वारिकादास 'महावग्ग', वाराणसी, 1996
- शास्त्री, द्वारिकादास 'धम्मपद', वाराणसी, 2000
- साहनी,दयाराम 'गाइड टू द बुद्धिस्ट रूइन्स इन सारनाथ', लिटरेरी लाइसेंसिंग, 2011
- भट्टाचार्या,बी0सी0 'हिस्ट्री आफ सारनाथ आर क्रेडल आफ बुद्धिज्म', पिलग्रिम्स पब्लिसिंग, वाराणसी, 2009
- वापट, वी0पी0 'बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष', प्रकाशन विभाग, सूचना–प्रसारण मंत्रलाय, भारत सरकार, 2010
- पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र 'बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास', उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ 2010
- रीजडेविड्स, टी0डब्लू0 'बुद्धिस्ट इण्डिया', मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, 1999
- गैरोला, वाचस्पति 'भारतीय संस्कृति और कला', उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, 2006
- अग्रवाल, वासुदेव शरण 'भारत की मौलिक एकता', राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2017
- वाजपेयी, शिवाकांत 'प्रारम्भिक बौद्धधर्म संघ एवम् समाज', ज्ञान भारती पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2002
- वापट, पी0वी0 'बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष' प्रकाशन विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय, 1956
- रीजडेविड्स, टी0 डब्लू0 'बुद्धिस्ट इण्डिया' मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिसर्स, 1999
- देशपाण्डे, अरूना 'जर्नी एक्रास बुद्धिस्ट इण्डिया' जायको पब्लिशिंग हाउस, 2013
- लाहिरी, नयनजोत 'द आर्कियोलॉजी आफ इण्डियन ट्रेड रूट्स (अपटू 200 बीसी)' ओयूपी इण्डिया पब्लिकेशन, 2000
- हेगडे, राजाराम 'शुंगा आर्ट :कल्चरल रिफलेक्सन' शारदा पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली, 2002
- दासवानी, रेखा 'बुद्धिस्ट मोनस्ट्रीज एण्ड मोनस्टिक लाइफ इन एंशिऐन्ट इण्डिया (थर्ड सेन्चुरी बी0सी0–सेवेन्थ सेन्चुरी ए0डी0)' आदित्य पब्लिकेशन, इण्डिया, 2007
- जाटव, डी0आर0 'द ह्यूमनिज्म आफ बुद्ध' इना श्री पब्लिकेशन, जयपुर, 1998
- दत्त, सुकुमार 'बुद्धिस्ट मोंक एण्ड मोनिस्ट्रीज आफ इण्डिया' मोती लाल बनारसी दास पब्लिसर्स, दिल्ली, 1988